हरिकथामृथसार
नैवेद्य समपण संधि

हरिकथामृथसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पॆळुवे
परम भगवध्भक्त्थरिधनाधरधि कॆळुवुधु

लेक्किसदे लकुमियनु बोम्मन
पोक्कुळिंदलि पडेद पोस पों
बक्किदॆरनु पडेदवयवगळिंद दिविजरनु
मक्कळंददि पोरेव सवद
रक्कसांतक रणदोळगे नि
दु:खसुखमय काय्द पाथन सूतनेंदेनिसि ३१–०१

दॊष गंध विदूर नाना
वॆषधारि विचित्रकम म
नीषि मायारमण मध्वांत:करणरूढ
शॆषशायि शण्य कौस्तुभ
भूषणसुकंधर सदा सं
तॊष बल सौंदयसारन महिमेगॆनेंबे ३१–०२

साशनानशॆने अभी एं
बी श्रुतिप्रतिपाद्यनेनिसुव
कॆशवन रूपद्वयव चिद्देहदोळहोरगे
बॆसरदे सद्भक्तियिंद उ
पासनेय गैयुत्त बुधरु हु
ताशननवॊलिप्पनेंदनवरत तुतिसुतिरु ३१–०३

सकल सद्गुण पूण जन्मा
द्य खिळ दॊष विदूर प्रकटा
प्रकट सद्व्यापारि गत संसारि कंसारि
नकुल नानारूप नीया

मक नियम्य निरामय रवि
प्रकरसन्निभ प्रभु सदा मांपाहि परमाप्त ३१–०४

चॆतनाचॆतन जगत्तिनो
ळाततनु तानागि लकुमी
नाथ सवरोळिप्प तत्तद्वुपगळ धरिसि
जातिकारन तेरदि एल्लर
मातिनोळगिद्दखिळकमव
ता तिळिसिकोळळदले माडिमाडिसि नॊडि नगुतिप्प ३१–०५

वीतभय विज्ज्ञन्यानदायक
भूतभव्यभवत्प्रभु खळा
राति खगवरवहन कमलाकांत निश्चिंत
मातरिश्वप्रिय पुरातन
पूतनाप्राणापहारि वि
धातृजनक विपश्जितर प्रिय सलहुसलहेम्म ३१–०६

दुष्टजनसंहारि सवॊत्
कृष्टमहिम समीरनुत सक
लॆष्टदायक स्वरत सुखमय मम कुलस्वामि
ह्रष्ट पुष्ट कनिष्ठ सृष्ट्या
द्यश्टकतृ करींद्रवरद य
थॆष्टदनु उन्नत सुकमा नमीपेननवरत ३१–०७

पाकशासन पूज्यचरण पि
नाकिसन्नुतमहिम सीता
शॊकनाशन सुलभ सुमुख सुवणवणनिभ
माकळत्र मनीषि मधुरिपु
ऎकमेवाद्वितियरूप प्र
तीक देवगणांतरात्मक पालिसुवुदेम्म ३१–०८

अप्रमेयोन्नत स्वरूप स
दा प्रसन्नमुखाब्ज मुक्तिसु
ख प्रदायक सुमनसाराधित पदांभोज
स्वप्रकाश स्वतंत्र सवग
इप्रफलदायक इतीश य
दु प्रवीर वितक्य विश्व सुतैजस प्राज्ञ्न्य ३१–०९

गाळि नडेवंददलि नीलघ
नाळि वतिसुवंते ब्रह्म त्रि
शूलधर शक्राक मोदलादखिळ देवगण
काल कम गुणाभिमानि म
हालकुमियनुसरिसि नडेवळु
मूलकारण मुक्तिदायक हरियेनिसिकोंब ३१–१०

मॊड कैबीसणिगेयिंदलि
ऒडिसुवेनेंबन प्रयत्नवु
कूडुवुदे कल्पांतकादरु लकुमिवल्लभनु
जॊडुकमव जीवरोळु ता
माडि माडिसि फलगळुणिसुव
प्रौढरादवरिवन भजिसि भवाब्धि दाटुवरु ३१–११

क्लेश मॊहाज्ञ्न्यान दॊष वि
नाशक विरिंचांडदोळगा
काशदॊपादियलि तुंबिहनेल्ल कालदल्लि
घासिगोळिसदे तन्नवरना
यास विल्लदे सलहुवनु करु
णासमुद्र प्रसन्नवदनांभोज वैराज ३१–१२

कन्नडिय कैपिडिदु नॊळपन
कण्णुगळु कंडल्लि एरगदे
तन्नवॊल् प्रतिबिंब कांबुवु दपणव बिट्टु

धन्यरिळेयोळगेल्ल कडेयलि
निन्न रूपव नोडि सुखिसुत
सन्नुतिसुतानंदवारिधियोळगे मुळुगिहरु ३१–१३

अन्नमानि शशांकनोळु का
रुण्यसागर केशवनु पर
मान्नदोळु भारतियु नारायणनु भयदोळु
सोन्नगदिरनु माधवनु श्इति
सन्नुत श्रीलमी गृतदोळु
मान्य गोविंदाभिधनु इरुतिप्पनेंदेंदु ३१–१४

ईरमानि सरस्वति जग
त्सार विष्णुव चिंतिसुवुदु स
रोहुहासन मंडिगेयोळिरुतिप्प मधुवैरि
मारुतनु नवनीतदोळु सं
प्रेरक त्रिविक्रमनु दधियोळु
वारिनिधि चंद्रमरोळगे इरुतिप्प वामननु ३१–१५

गरुड सूपके मानि श्री श्री
धरनु देवते पत्रशाकके
वरनेनिप मित्राख्य सूय हृषीकपन मूति
उरगराजनु फल सुशाखके
वरनेनिसुवनु पद्मनाभन
स्मरिसि भुंजिसुतिहरु बल्लवरेल्ल कालदलि ३१–१६

गौरि सवांलस्थळेनिपळु
शौरि दामोदरन तिळिवुदु
गौरि पानांलस्थ संकरुषणन चिंतिपुदु
सारशकर गुडदोळगे वृ
त्रारि इरुतिह वासुदेवन
सूरिगळु धेनिपरु परमादरदि सवत्र ३१–१७

स्मरिसु वाचस्पतिय सॊप
स्करदॊळगे प्रद्युंननिप्पनु
निरयपति यमधम कटुद्रव्यदॊळगनिरुद्ध
सरषप श्रीरामठॆळदि
स्मरन श्रीपुरुषॊत्तमन क
पूरदि चिंतिसि पूजिसुतलिरु परमभकुतियलि ३१-१८

नालिगिंदलि स्वीकरिप रस
पालु मॊदलाददरॊळगे घृत
तैलपक्वपदाथदॊळगिह चंद्रनंदनन
पालिसुवधॊअजन चिंतिसु
स्थूलकूष्मांड तिल माषज
ई ललितभअदॊळु दअनु लमीनरसिंह ३१-१९

मनवु माषसुभयदॊळु चिं
तनेय माडच्युतन निरऋति
मनेयेनिप लवनदॊळु मरेयदे श्रीजनादनन
नेनेवुतिरु फलरसगळॊळु प्राणन
उपॆंद्रन वीळयदॆलेयॊळु
द्युनदि हरिरूपवने कॊंडादुतलि सुखिसुतिरु ३१-२०

वॆदविनुतगे बुधनु सुस्वा
दॊदकाधिपनॆनिसिकॊंबनु
श्रीदकृष्णन तिळिदु पूजिसुतिरु निरंतरदि
साधुकमव पुष्करनु सुनि
वॆदित पदाथगळ शुद्धिय
गैदगैसुत हंसनामकगपिसुतलिप्प ३१-२१

रति सकल सुस्वादुरसगळ
पतियेनिसुवळु अल्लि विश्वनु

हुतवहन चूलिगळोळगे भागवन चिंतिपुदु
इतिज गॊमयजादियोळु सं
स्थित वसंतन ऋषभदेवन
तुतिसुतिरु संतत सदा सद्भक्तिपूवकदि ३१–२२

पाक कतृगळोळगे चतुदश
लॊकमाते महालकुमि गत
शॊक विश्वंभरन तिळिवुदेल्ल कालदलि
चौकशुद्धसुमंडलदि भू
सूकराह्वय उपरिचैलप
ऐकदंत सनथ्कुमारन धेनिपुदु बुधरु ३१–२३

श्रीनिवासन भॊग्यवस्तुव
काणगोडदंदलि विष्व
क्सॆन परिखारूपनागिहनल्लि पुरुषाख्य
तानॆ पूजक पुज्यनेनिसि नि
जानुगर संतयिप गुरुपव
मानवंदित सवकालगळल्लि सवत्र ३१–२४

नूतन समीचीन सुरसॊ
पेत हृद्यपदाथदोळु विधि
माते तत्तद्रसदोळु रसरूप तानागि
प्रीतिपडिसुत नित्यदि जग
न्नाथ विठलन कूडि ता नि
भितळागिहळेंदरितु नी भजिसि सुखिसुतिरु ३१–२५